राष्ट्रीय शिक्षा नीति में 'परख'— एक प्रयास का मनोवैज्ञानिक प्रभाव

कृष्ण चंद्र चौधरी*
अरविंद कुमार**

शिक्षा मानव की अंदरूनी योग्यताओं एवं क्षमताओं को उजागर करने का कार्य करती है। शिक्षा के द्वारा ही बेहतर तथा जागरूक इंसान बनाए जाते हैं। भावी पीढ़ी में दक्षता एवं मूल्यों को सिखाने का कार्य शिक्षा बखूबी निभाती है। इसलिए, यह आवश्यक हो जाता है कि देश के नौनिहालों को ऐसी शिक्षा प्रदान की जाए जिससे वह हमारे समाज व राष्ट्र की परंपरा एवं संस्कृति को ऊँचा उठाकर वैश्विक विचारधारा के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सकें और उसे समाज में साझा भी कर सकें। शिक्षा प्राप्त करने के बाद बालक के व्यवहार में परिवर्तन आता है। यह परिवर्तन कितना हुआ है, बच्चों ने कितना सीखा है, अगर सीखने में कठिनाई हुई तो किन तरीकों से उसकी पहचान की गई तथा बेहतरी के लिए क्या प्रयास किए गए। इन सबको जाँचने-परखने का एक सर्वमान्य एवं न्याय संगत तरीका होना चाहिए। ऐसी ही परिकल्पना को मूर्त रूप दे रही है— राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020। इस नीति में स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक कई अहम बदलाव हो रहे हैं। ऐसा ही एक प्रमुख बदलाव आकलन प्रणाली को लेकर किया जा रहा है। विद्यार्थियों के समग्र विकास को आँकने तथा बेहतर बनाने के लिए एन.ई.पी. 2020 में राष्ट्रीय स्तर के एक स्वायत्त निकाय 'परख' की स्थापना की जा रही है। फलत: राष्ट्रीय शिक्षा नीति में 'परख' के मनोवैज्ञानिक प्रभाव से सभी हितधारकों में सकारात्मक बदलाव आएँगे।

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2015 में अपनाए गए 'सतत विकास एजेंडा 2030' के लक्ष्य 4 में वैश्विक स्तर पर 2030 तक 'सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तायुक्त शिक्षा निर्धारित करने और जीवनपर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिए जाने' की बात कही गई है। इन्हीं लक्ष्यों को ध्यान में रखकर हमारे देश की संस्कृति एवं परंपरा से लैस राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में 'सबके लिए शिक्षा' की आसान पहुँच, गुणवत्ता, वहनीयता एवं जवाबदेही के बुनियादी स्तंभों को लागू किया जा रहा है। इसके साथ ही वैश्विक विचारधारा

*विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, सहजानंद ब्रह्मर्षि महाविद्यालय, आरा (वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय), भोजपुर (बिहार) 802 301
**सहायक प्राध्यापक, शिक्षक शिक्षा विभाग, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर 244 901

को स्थानीय स्तर पर लागू किया जा रहा है। विश्व स्तर की शिक्षा व्यवस्था को हमने कितना अपनाया है तथा हम ज्ञान के वैश्विक पैमाने पर किस स्तर तक खरे उतर रहे हैं, इन सबके आकलन हेतु हमें अपनी मूल्यांकन प्रक्रिया में बदलाव करने की ज़रूरत होगी।

नवीन शिक्षा नीति में शिक्षा के मायने मात्र सीखने-सिखाने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का समग्र एवं सुखद विकास करने की मंशा से देश में लागू हुई है। यह नीति बच्चों में 21वीं सदी के अनुरूप रचनात्मकता, प्रायोगिक अनुभव, जीवन कौशल, डिजिटल कौशल, समस्या-समाधान कौशल एवं अवधारणात्मक समझ को विकसित करेगी। साथ ही, बच्चों में इनकी कितनी बौद्धिक, भावनात्मक एवं व्यावहारिक समझ पैदा हो पाई है, इसकी समुन्नत व सर्वमान्य जाँच-पड़ताल करने हेतु आकलन निकाय को स्थापित करने का सुझाव भी प्रदान कर रही है।

इस नीति से पहले भी माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–1953), राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964–1966) तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968, 1986 (संशोधन 1992) में विद्यार्थियों के प्रदर्शन के आकलन हेतु रटने की आदत को रोकने, बच्चे में परीक्षा के दबाव एवं भय को कम करने के साथ-साथ प्रमाणन परीक्षा (बोर्ड), पूरक प्रणाली, वर्ष में दो बार परीक्षा, अंकन प्रणाली, परीक्षा के प्रकार, मूल्यांकन के तरीके, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन जैसे विभिन्न आकलनात्मक सुधारों को लागू करने का प्रयास किया गया था। सही मायने में ऐसे बहुत से सुधार साकार भी हुए थे, लेकिन फिर भी आज तक मूल्यांकन के तरीकों को उचित मुकाम नहीं मिला। विभिन्न शिक्षाविद भी कहते आए हैं कि यदि शिक्षा व्यवस्था के किसी एक भाग में बदलाव करने की बात की जाए तो वह मूल्यांकन प्रणाली ही होगी। देशभर की आकलन प्रक्रिया एवं नियमों को समझने, लागू करने तथा समय के हिसाब से बदलने के लिए मौजूदा प्रयासों में रचनात्मकता एवं नवीन सोच लानी होगी तभी विद्यार्थियों में महत्वपूर्ण सोच, जिज्ञासा, मौलिकता, पलटावी क्षमता, उच्च स्तरीय चिंतन कौशल का विकास संभव हो पाएगा। विद्यार्थियों के हुनर तथा काबिलियत की बेहतर जाँच-पड़ताल करने हेतु एन.ई.पी. 2020 में राष्ट्रीय स्तर के एक स्वायत्त निकाय 'परख' (प्रदर्शन मूल्यांकन, समीक्षा एवं समग्र विकास के लिए ज्ञान का विश्लेषण) की स्थापना की जा रही है।

इस शिक्षा नीति में 'परख' एक नवीन प्रयोग है, जो कि पूरे राष्ट्र की स्कूली शिक्षा के मूल्यांकन में एकरूपता लाएगा। विद्यार्थियों के मूल्यांकन के ऐसे तरीके सुझाएगा जो कि न्यायसंगत, भरोसेमंद व प्रभावी शिक्षण में मील का पत्थर साबित होंगे। यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मूल्यांकन के सभी रूपों की कला सिखाएगा। अभी तक केंद्र एवं राज्यों के स्कूली शिक्षा के अपने-अपने प्रमाणन बोर्ड हैं और प्रत्येक बोर्ड के मूल्यांकन के तरीके भी अलग-अलग हैं। जिसके कारण विद्यार्थियों को सीखने, अंक प्राप्त करने एवं कौशल को जाँचने के समान व न्यायसंगत अवसर प्राप्त नहीं हो पाते हैं। समान प्रदर्शन करने के बावजूद भी वह कई मायने में कुछ राज्यों व केंद्रीय बोर्ड (सी.बी.एस.ई./आई.सी.एस.ई.) के विद्यार्थियों

की तुलना में नुकसान में रहते हैं। कई बार तो बोर्ड परीक्षाओं के नतीजे आने के बाद कुछ विद्यार्थी तो चिंता एवं अवसाद से घिर कर अनहोनी तक के शिकार हो जाते हैं।

सच्चाई तो यह है कि विद्यार्थियों के प्रदर्शन का मूल्यांकन, समीक्षा, विश्लेषण करने हेतु 'परख' वास्तव में आज की ज़रूरत है। आकलन के क्षेत्र में 'परख' यकीनन भविष्य के स्वर्णिम भारत की आधारशिला साबित होगा।

क्या है 'परख'?

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) ने भारत का पहला राष्ट्रीय मूल्यांकन नियामक, 'परख' जारी किया है, जो देश में सभी मान्यता प्राप्त स्कूल बोर्डों के लिए विद्यार्थी मूल्यांकन और मूल्यांकन के लिए मानदंड, मानक और दिशानिर्देश स्थापित करने पर काम करेगा। 'परख' समग्र विकास के लिए प्रदर्शन मूल्यांकन, समीक्षा और ज्ञान के विश्लेषण के लिए खड़ा है। यह रा.शै.अ.प्र.प. के शिक्षा सर्वेक्षण प्रभाग के भीतर स्थापित किया गया है।

क्यों ज़रूरी 'परख'?

- 'परख' एक अनुपम प्रयोग, पहल है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति का हिस्सा है, जो कि सीखने के स्तर एवं सीखने के अंतर को परखने में सहायक होगा।
- 'परख' नई परीक्षा नियामक संस्था है जो कि ज्ञानार्जन के लिए नियमित रचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करेगी।
- राष्ट्रीय स्तर पर यह एक स्वतंत्र इकाई के रूप में होगा, जो साधारण परिवारों के बच्चों को भी समग्र विकास की ओर ले जाएगा।
- 'परख' से स्कूली शिक्षा की पहुँच, गुणवत्ता, वहनीयता एवं जवाबदेही में सुधार होगा।
- विद्यार्थियों के मूल्यांकन के लिए रूपरेखा, नियम और दिशानिर्देश तैयार किए जाएँगे यानी समान 'बेंचमार्क ढाँचा' बनाने की योजना को मूर्त रूप दिया जाएगा।
- मूल्यांकन संबंधी मुद्दों एवं चुनौतियों की परख तथा परीक्षा पद्धति की जाँच-पड़ताल की जाएगी।
- रटने से ज़्यादा विषयों की समझ, वैचारिक स्पष्टता पर ज़्यादा ज़ोर रहेगा। योग्यता आधारित विषयों को बच्चे के जीवन से जोड़कर परखा जाएगा।
- बच्चों की सभी गुणों, कौशल एवं कमज़ोरियों का पोर्टफोलियो तैयार होगा।
- देश-दुनिया के माने हुए शिक्षाविदों द्वारा निरंतर शोध तथा मूल्यांकन के आधार पर बच्चों के ज्ञान, कौशल, मूल्यों का विश्लेषण एवं प्रगति की समीक्षा होगी।
- विभिन्न परीक्षा बोर्डों के मूल्यांकन के अंतराल को पाटने हेतु केंद्रीय और राज्य शिक्षा बोर्ड की कक्षा 10 एवं 12 की परीक्षा में एकरूपता लाने की तैयारी।
- समावेशी मूल्यांकन को बढ़ावा— विद्यार्थियों के वातावरण, जेंडर, अक्षमता को ध्यान दिए बिना समानता एवं न्यायसंगतता के दरवाज़े खुलेंगे।
- राज्य बोर्ड, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) और माध्यमिक शिक्षा के भारतीय प्रमाणपत्र (आई.सी.एस.ई.) की अलग-अलग कार्य प्रणाली तथा आकलन प्रणाली को एक पैमाने पर लाना।
- छात्रों के बेहतर भविष्य हेतु परीक्षा, तनावमुक्त पढ़ाई एवं बस्ते के बोझ को हल्का करने का प्रयास अर्थात रचनात्मक तरीके से सीखने तथा आकलन

को बढ़ावा देने के लिए पाठ्यक्रम, पुस्तकों एवं शिक्षण विधियों में भी बदलाव होगा।

- राष्ट्रीय योग्यता सह-प्रवेश परीक्षा (नीट), संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जे.ई.ई.), केंद्रीय विश्वविद्यालय सामान्य प्रवेश परीक्षा (सी.यू.ई.टी.) के बाद अब बोर्ड परीक्षा में बदलाव की तैयारी। यानी उच्च अध्ययन के लिए सभी को मिलेगी समान प्रतिस्पर्धा।
- राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण, राज्य उपलब्धि सर्वेक्षण कराने की ज़िम्मेदारी।
- 'परख' की स्वीकार्यता आने वाले समय में शिक्षा प्रणाली में बड़ा फेरबदल लाएगी जिससे समस्त हितधारकों की सोच में भी बदलाव आएगा।
- 'परख' केंद्रीय तथा राज्य बोर्डों का सलाहकार, समालोचक तथा हितैषी होगा। अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मूल्यांकन का खाका खींचा जाएगा।
- दक्षता आधारित आकलन पद्धति को बढ़ावा तथा इसके संदर्भ में पाठ्यचर्या को पुनः परिभाषित करने हेतु 'परख' की ज़रूरत।

मूल्यांकन से जुड़े सुधार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यार्थियों के समग्र विकास, प्रदर्शन एवं प्रगति की बेहतर सूचना प्राप्त करने के लिए नियमित और रचनात्मक आकलन प्रणाली को अपनाने का प्रस्ताव दिया गया है। साथ ही, इसमें समझ, विश्लेषण क्षमता एवं वैचारिक स्पष्टता को भी जाँचा जा रहा है। बच्चे कक्षा 3, 5 और 8 के स्तर पर स्कूली इम्तिहान में भाग लेंगे, जिनको कि उपयुक्त प्राधिकरण द्वारा संपादित किया जाएगा। बच्चों के समग्र विकास एवं विषयवस्तु की गहनता को ध्यान में रखते हुए कक्षा 10 एवं 12 की परीक्षाओं में बदलाव किए जा रहे हैं। इन कक्षाओं में बोर्ड के इम्तिहान तो होंगे, किंतु इनके महत्व को अपेक्षाकृत कम कर दिया जाएगा। साल में 2 बार (छमाही एवं वार्षिक) बोर्ड परीक्षाएँ होंगी। ज़रूरी होने पर परीक्षा सुधार का भी मौका दिया जाएगा तथा आगे चलकर इच्छानुसार परीक्षा के भी रास्ते खुलेंगे। बोर्ड परीक्षाओं को दो हिस्सों में बाँटा जाएगा— वस्तुनिष्ठ और विवरणात्मक।

सभी विषयों का आकलन दो स्तरों पर किया जाएगा— एक कक्षा स्तर पर आंतरिक तथा दूसरा प्रमाणन (बोर्ड) के रूप में बाह्य। इससे विद्यार्थियों पर बोर्ड परीक्षाओं का तनाव एवं दबाव कम होगा। परीक्षा में मुख्य ज़ोर उच्च स्तरीय कौशल एवं विषयों को बच्चों के जीवन से जोड़कर ज्ञान का परीक्षण करना होगा, ताकि बच्चों में रटने की आदत खत्म हो और व्यावहारिक मॉडल तैयार हो सकें। पाठ्यक्रम को मूल अवधारणाओं की समझ के दायरे में लाया जाएगा। यह अहम बदलाव 2023–2024 सत्र वाली बोर्ड परीक्षाओं से लागू होने की संभावना है। नया राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र (परख) सभी मान्यता प्राप्त स्कूल बोर्डों, विद्यार्थी क्षमता निर्धारण और मूल्यांकन के लिए मानक मापदंड निकाय के रूप में कार्य करेगा। इसके मनोवैज्ञानिक प्रभाव से समाज में ज़रूर सकारात्मक बदलाव आएँगे।

21वीं सदी के हिसाब से बच्चों के आकलन के वैश्विक मापदंडों का पालन किया जाएगा अर्थात केवल संज्ञानात्मक पक्ष के विकास पर ही नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण एवं प्रमुख कौशलों से भी बच्चों का विकास किया जाएगा।

सीखने के पारंपरिक तरीकों में बदलाव

पाठ्यचर्या तथा सिखाने के परंपरागत रटने के तरीके को कमतर करते हुए बच्चों में निहित अनुभाविक क्षमता, करके सीखने की क्षमता, रचनात्मकता, व्यावहारिकता एवं अवधारणात्मक समझ को जाँचा-परखा जाएगा। यानी विद्यार्थियों की असली योग्यता का आकलन किया जाएगा। इसके साथ ही विश्लेषण, गहन सोच और वैचारिक स्पष्टता, जैसे उच्च स्तरीय कौशलों को बच्चों में विकसित कर उनको अंतर्राष्ट्रीय स्तर की कसौटी पर कसा जाएगा। आकलन के उपकरणों को सीखने के परिणामों, क्षमताओं एवं रुझानों के साथ जोड़ा जाएगा। कोचिंग संस्कृति को बढ़ावा देने वाले योगात्मक सत्रांत परीक्षा केंद्रित आकलन की जगह सीखने के नियमित व सतत रचनात्मक मूल्यांकन पर विशेष ज़ोर रहेगा, क्योंकि यह तरीका बच्चों की योग्यता व प्रदर्शन का कहीं अधिक बेहतर ढंग से चित्रण करता है और आनंददायक भी है। यह बच्चों की विशेषताओं तथा कमज़ोरियों को पहचान कर उन्नति की राह खोलता है।

वर्तमान उपलब्धि आधारित पढ़ाई-लिखाई की जगह दक्षता आधारित सीखने-सिखाने पर ज़ोर रहेगा। कक्षा में समझ एवं दक्षता आधारित शिक्षण व्यवस्था को लागू करने हेतु आकलन पद्धति में बदलाव किया जाएगा। दक्षता एक तरह से ज्ञान, कौशल, मूल्य और नज़रिए का गठजोड़ है जिसको कि समग्र रूप से परखा जाएगा। मूल्य एवं समझ को विकसित करने के लिए बच्चों को कम उम्र से ही 'सही करने' के लिए तैयार किया जाएगा। बच्चे पारंपरिक भारतीय मूल्यों तथा बुनियादी संवैधानिक मूल्यों (सेवा, अहिंसा, स्वच्छता, शांति, त्याग, सहिष्णुता, देशभक्ति, लोकतंत्र, बुज़ुर्गों का सम्मान, लैंगिक संवेदनशीलता, समानता, विश्वबंधुत्वता आदि) के बारे में विभिन्न नज़रियों के आधार पर तर्क तथा निर्णय कर सकेंगे।

विषयी पाठ्यक्रम के साथ अब तक कमतर मानी जाने वाली पाठ्येत्तर गतिविधियों को बराबर का दर्जा देकर उनका मूल्यांकन किया जाएगा। यानी विद्यार्थियों का समग्र आकलन 'परख' के माध्यम से किया जाएगा। सही मायने में आकलन का मूल उद्देश्य 'सीखने के लिए' होगा। यह पूरी स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बच्चों की मदद तो करेगा ही साथ ही शिक्षकों को भी सीख देगा। कुल मिलाकर सीखने-सिखाने की पूरी प्रक्रिया को पुनः डिजाइन किया जाएगा। जिससे विद्यार्थियों के सोचने-समझने की क्षमता बढ़ेगी। 'परख' के तहत बच्चों की प्रगति एवं प्रदर्शन का मूल्यांकन तथा उनके अपने भविष्य से जुड़े निर्णय लेने में सहायता प्रदान करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) आधारित सॉफ्टवेयर का प्रयोग होगा।

स्कूली शिक्षा में 'परख' का काम

शिक्षा मंत्रालय के तहत एक मानक निर्धारण निकाय के रूप में राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र 'परख' की स्थापना की जाएगी। 'परख' राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) के एक स्वायत्त घटक के रूप में कार्य करेगा। स्कूली शिक्षा के सभी चरण (बुनियादी, प्रारंभिक, मध्य एवं माध्यमिक) इसका हिस्सा होंगे।

इसका दायित्व स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता, मानक एवं मूल्यांकन प्रणाली को बेहतर बनाना

होगा। विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए ज्ञान, प्रदर्शन की समीक्षा करने को लेकर बने नियम, मानक, दिशानिर्देश एवं अनुपालन से जुड़ी गतिविधियों को पूरा करना होगा।

मूल्यांकन के लिए क्षमता निर्माण को मज़बूत बनाना, तकनीकी सहयोग देना, विद्यार्थियों के 'सीखने के परिणामों' की निगरानी, तुलना एवं सूचना प्रदान करने का कार्य 'परख' करेगा। नमूना आधारित राष्ट्रीय उपलब्धि परीक्षण कक्षा 3 और 5 में भाषा, गणित, पर्यावरण अध्ययन (ई.वी.एस.), कक्षा 8 में भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान तथा कक्षा 10 में इन विषयों के साथ-साथ अंग्रेजी विषय में भी विद्यार्थियों के प्रदर्शन एवं प्रगति का आकलन करेगा। इसके साथ ही परीक्षा बोर्डों का मार्गदर्शन करना, सभी स्कूल बोर्डों को मूल्यांकन के बेहतरीन तरीके साझा करना तथा गठजोड़ स्थापित करना भी इसका ही काम होगा।

परीक्षाओं के नतीजों का उपयोग स्कूली शिक्षा प्रणाली की तरक्की के मकसद से किया जाएगा, जिसे स्कूल समग्र रूप से सार्वजनिक करेंगे अर्थात यह नतीजे एक तरह से स्कूल की प्रगति के सूचक होंगे न कि अकेले बच्चे के, यानी आकलन स्कूल आधारित होगा। विद्यार्थियों की निजता का पूरा ख्याल रखा जाएगा।

'परख' बाद में मूल्यांकन से जुड़े सभी कार्यों, मुद्दों, सूचनाओं तथा विशेषताओं के लिए राष्ट्रीय एकल खिड़की स्रोत (सिंगल विंडो सोर्स) के रूप में काम करेगा। जिसमें राष्ट्रीय और ज़रूरत के मुताबिक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी रूपों में मूल्यांकन की कला को सीखा जा सकेगा। ऐसी उम्मीद की जा रही है कि यह सभी संबंधित संगठनों जैसे— 'बोर्ड ऑफ असेस्मेंट' (बी.ओ.ए.), रा.शै.अ.प्र.प. एवं एस.सी.ई.आर.टी. सहित अन्य संगठनों के साथ मिलकर काम करेगा।

विश्व बैंक, सीखने-सिखाने की मूल्यांकन प्रणाली को मज़बूत बनाने के लिए स्टार्स (स्ट्रेंथिंग टीचिंग लर्निंग एंड रिजल्ट फॉर स्टेट्स) योजना के ज़रिए भारतीय शिक्षा मंत्रालय की मदद करेगा। साथ ही हमारे बच्चों की पठन साक्षरता, गणित एवं विज्ञान में सीखने के स्तर को अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थी मूल्यांकन (पी.आई.एस.ए.) के दर्जानुसार करने हेतु भारत की भागीदारी का प्रबंधन करने के लिए 'परख' को लंबे समय के लिए वित्तीय सुविधा उपलब्ध कराएगा। जिससे अंततः 'परख' को पंख मिलेंगे।

शैक्षिक परीक्षण सेवा (ई.टी.एस.), अमेरिकन शोध संस्थान (ए.आई.आर.) तथा ऑस्ट्रेलियन शैक्षिक शोध परिषद (ए.सी.ई.आर.) जैसी अंतर्राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं ने देश के पहले स्कूल स्तरीय आकलन एवं मूल्यांकन नियामक संस्था 'परख' को गठित करने हेतु हाथ बढ़ाया है।

विद्यार्थियों का आकलन

मूल्यांकन की कला सिखाने के क्षेत्र में 'परख' एक विचारशील अगुवा होगा। यह उन राष्ट्रीय तथा वैश्विक स्तर के सलाहकारों एवं विशेषज्ञों का घर होगा, जो शिक्षा प्रणाली की गहरी समझ रखते हैं, आकलन प्रणाली के महारथी हैं और यह जानते हैं कि बच्चे कैसे सीखते हैं? क्या सीखना चाहते हैं?

उन्हें सीखने में कहाँ परेशानी हो रही है? और किस क्षेत्र में बच्चे को ज़्यादा मदद की ज़रूरत है? इन सब कौतुहलों का जवाब 'परख' से मिलेगा। इसके द्वारा बच्चों में आत्मविश्वास तथा मेहनत करने की आदत का विकास होगा। उन्हें यह भरोसा होगा कि हमें हमारी मेहनत का पूरा मेहनताना समान रूप से मिल रहा है। उन्हें परीक्षा की चिंता और डर भी नहीं सताएगा।

'परख' द्वारा बच्चों के प्रदर्शन का आकलन बिना किसी भेदभाव के पेशेवर और भविष्य के तरीकों को ध्यान में रखकर किया जाएगा। इसमें विद्यार्थियों के 'सीखने के परिणाम' का ही नहीं, बल्कि सीखने के अनुभवों का भी मूल्यांकन किया जाएगा।

'परख' द्वारा विद्यार्थियों को सीखने के साथ-साथ वैचारिक स्पष्टता के आकलन के अवसर प्राप्त होंगे। किताबी ज्ञान के साथ आलोचनात्मक चिंतन एवं रचनात्मकता को भी परखा जाएगा। विद्यार्थियों में समय के साथ हो रहे बदलाव के अनुरूप सीखने तथा कमियों को दूर करने की पूरी व्यवस्था होगी। 'परख' बच्चों के मात्र ज्ञानात्मक पक्ष का ही नहीं, बल्कि भावनात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों का भी आकलन करेगा। यानी स्कूल आधारित आकलन के प्रगति कार्ड को एक नया रूप दिया जाएगा। यह कार्ड विद्यार्थी के समग्र 360 डिग्री विकास का सूचक होगा। इस कार्ड (एच.पी.सी. संपूर्ण प्रगति कार्ड) में हरेक बच्चे की सामर्थ्य, रुचि एवं काबिलियत के क्षेत्र को उकेरा जाएगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की दिशा-दृष्टि में भी भावनात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों का विकास करने वाली पाठ्य-सहगामी गतिविधियों (कला-शिल्प, खेलकूद, संगीत, कौशल, शारीरिक शिक्षा, समूह कार्य, सृजनशीलता, नेतृत्व, परिश्रम करने की इच्छा एवं प्रेरणा आदि) को सीखने तथा आकलित करने की प्रक्रिया से जोड़ने की बात कही गई है।

'परख' पाठ्य-विषय एवं पाठ्येतर विषयों के अंतराल को पाटने का काम करेगा। बच्चों के सीखने के स्तर में अंतर का विश्लेषण कर उनका प्रदर्शन बेहतर बनाने में मदद करेगा। संकुल स्तर से उच्च स्तर तक विद्यार्थियों की सभी अपेक्षाओं, आशाओं, क्षमताओं की समग्र रूप से निगरानी की जाएगी। मूल्यांकन की ऑनलाइन व्यवस्था के तहत तकनीकी (सॉफ्टवेयर) को सराहा जाएगा। सॉफ्टवेयर की सहायता से बच्चे स्वयं अपनी तथा अभिभावक, शिक्षक व अधिकारीगण विद्यार्थियों की प्रगति ट्रैक कर सकेंगे। बच्चों का आकलन तभी कारगर माना जाएगा जब बच्चे रटंत पद्धति की जगह ज्ञान की अवधारणा को समझें व समझे हुए ज्ञान को अपने व्यवहार में उतारें। इस प्रकार के ज्ञान से वह अपनी रचनात्मकता, पलटावी समझ, हुनर एवं असाधारणता (नोबलिटी) को गढ़ सकेंगे। आज के समय में जब हम अंतर्राष्ट्रीय पैमानों के हिसाब से शिक्षा व्यवस्था बनाने की बात करते हैं तो बच्चों की इन सब खूबियों को जाँचने-परखने हेतु राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के समान मूल्यांकन प्रणाली का होना भी बहुत ज़रूरी है। आकलन के ऐसे स्तरीय तरीके ही हमें उन पुरस्कार एवं सम्मान को दिला सकते हैं जो कि अभी तक हमें हमारी संख्या एवं सामर्थ्य के हिसाब से कम ही मिल पाए हैं, जैसे— नोबेल, ऑस्कर, मैन बुकर, रेमन मैग्सेसे, पुलित्जर पुरस्कार आदि।

'परख' का सलाहकार के रूप में कार्य

मूल्यांकन प्रक्रिया में सुधार तथा इस क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय मानकों को तरजीह देने के लिए 'परख' की स्थापना हो रही है। इसके सफल संचालन के लिए एक परामर्श एजेंसी को काम पर रखा जाएगा। तीन साल की अपेक्षित कार्यान्वयन अवधि के साथ 'असाइनमेंट' की प्रारंभिक तिथि 1 अक्तूबर होगी। परामर्श एजेंसी, 'परख' की कोर टीम को अकादमिक और तकनीकी सहायता प्रदान करेगी। साथ ही, स्थानीय से लेकर राष्ट्रीय और इससे भी आगे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न हितधारकों (विद्यार्थी, अभिभावक, शिक्षक, प्रधानाचार्य एवं अधिकारियों) की क्षमताओं का निर्माण करेगी और समर्थन प्रदान करेगी। साइकोमेट्रिक विश्लेषण और दस्तावेज़ी प्रक्रिया को मज़बूत बनाएगी। परामर्श एजेंसी, विशेषज्ञों और कर्मचारियों के ज्ञान एवं कौशल का मूल्यांकन करके उनको अल्पकाल (3 वर्ष) और लंबी अवधि (5–10 वर्ष) के लिए भर्ती करेगी जो कि 'परख' के कुशल संचालन में रा.शै.अ.प्र.प. की मदद करेंगे।

'परख' द्वारा राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एन.ए.एस.) 2024 के लिए एक विस्तृत एवं बेहतर रूपरेखा बनाई जाएगी जो कि विद्यार्थियों के सीखने के परिणामों को जानने तथा अंकों की तुलना करने में मदद करेगा। परामर्शदाता एजेंसी 'परख' की टीम को विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मूल्यांकन कार्यक्रमों, जैसे— अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थी मूल्यांकन के लिए कार्यक्रम (पी.आई.एस.ए.), अंतर्राष्ट्रीय गणित और विज्ञान अध्ययन में रुझान (टी.आई.एम.एस.एस.) और अंतर्राष्ट्रीय पठन साक्षरता अध्ययन में प्रगति (पी.आई.आर.एल.एस.) से रूबरू कराएगी, और भारत के लिए उचित कार्यक्रमों की पहचान करने में उसकी मदद करेगी। यह एजेंसी एक या एक से अधिक अंतर्राष्ट्रीय मूल्यांकन में भाग लेने के लिए 'परख' की टीम भी तैयार करेगी, जिसमें 'पायलट प्रोजेक्ट' के तौर पर स्कूलों के लिए अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थी मूल्यांकन (पी.आई.एस.ए.) या अन्य परिचित अभ्यास करना शामिल है।

'परख' 21वीं सदी की कौशल आधारित ज़रूरतों को ध्यान में रखकर मूल्यांकन पैटर्न को बदलने में बोर्डों की मदद करेगा। नए मूल्यांकन पैटर्न और नवीनतम शोध के बारे में स्कूल बोर्डों को सलाह देगा। स्कूल बोर्डों के मध्य समन्वय एवं सहयोग को बढ़ावा देगा तथा विद्यार्थियों के बीच शैक्षणिक मानकों की बराबरी को कायम करेगा। स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों, जैसे— मूलभूत, प्रारंभिक, मध्य और माध्यमिक को सम्मिलित करते हुए स्कूल आधारित मूल्यांकन तय किए जाएँगे।

शिक्षकों के लिए फायदेमंद साबित होगा 'परख'

- विद्यार्थी केंद्रित शिक्षणशास्त्र को लागू करने के लिए शिक्षकों में क्षमता निर्माण को मज़बूत किया जाएगा। 'सॉफ्ट स्किल', पुस्तकालय, शिक्षण सामग्री, हस्तपुस्तिका, कक्षा प्रबंधन, ई-संसाधन एवं संदर्शिका जैसे शिक्षक संसाधनों की रूपरेखा दुबारा खींची जाएगी।
- शिक्षकों की क्षमताओं का भरपूर उपयोग करने हेतु उन्हें कहीं ज़्यादा भरोसेमंद व उचित आकलन के तरीके, साधन, नियमावली, दिशानिर्देश और प्रशिक्षण आदि प्रदान किए जाएँगे।

- 'परख' शिक्षकों को अपने अंदर यह झाँकने को विवश करेगा कि वह किस स्तर का पठन-पाठन करते हैं और उन्हें अपना शत-प्रतिशत योगदान देने हेतु अपनी शिक्षण नीति में किस प्रकार के बदलाव लाने चाहिए।
- 'परख' टीम शिक्षकों की उन सभी दक्षताओं की समीक्षा तथा आकलन करेगी जो कि बच्चों के समग्र प्रदर्शन तथा सीखने के परिणाम हेतु ज़रूरी हैं। ऐसा होने पर शिक्षकों को भी प्रोत्साहन मिलेगा तथा उनका मनोबल बढ़ेगा।
- शिक्षक, बालक की बौद्धिक खासियत ही नहीं, बल्कि भावनात्मक एवं क्रियात्मक पहलू, जैसे— मिल-जुलकर कार्य करना, पूछताछ आधारित सीखना, प्रश्नोत्तरी, रोल प्ले, खेलकूद, वाद-विवाद, चित्रकारी, गाना-बजाना, मूल्य एवं नैतिकता जैसी खूबियों को जानकर उनमें बच्चों की भागीदारी को बढ़ाएँगे तथा प्रदर्शन को परख सकेंगे। एक तरह से शिक्षकों के पास विद्यार्थियों का पूरा 'पोर्टफोलियो' होगा।
- शिक्षक डिजिटली मज़बूत होंगे। बच्चों की तरक्की एवं प्रदर्शन को ट्रैक करने हेतु ऑनलाइन प्लेटफार्म/तकनीकी आधारित सॉफ्टवेयर का उपयोग कर सकेंगे। बहुआयामी प्रगति कार्ड के द्वारा शिक्षक, माता-पिता के साथ बच्चे के बारे में जानकारी साझा कर सकेंगे तथा स्वयं भी बच्चे की खूबियों को पहचान सकेंगे।
- शिक्षक, बच्चों में रट्टामार पद्धति की जगह अवधारणामक समझ को बढ़ाने पर ज़ोर देंगे, साथ ही बच्चों की योग्यताओं, क्षमताओं, रुचि तथा फोकस के क्षेत्रों की पहचान कर उनका करियर चयन में मददगार होंगे।
- बच्चों के बस्ते का बोझ या किसी भी तरह का बोझ कम करने एवं काफ़ी कम विषय सामग्री का टेस्ट लेने की व्यवस्था होने की वजह से शिक्षक भी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में पूरे मनोयोग से जुटेंगे।
- बच्चों की रचनात्मक, अनुभवात्मक, प्रायोगिक, खोजिए, तार्किकता जैसी खूबियों को शिक्षक जाँच-परख सकेंगे जिससे शिक्षकों के लिए भी नियमित सीखने व प्रशिक्षण प्राप्त करने के नवीन द्वार खुलेंगे।
- कोचिंग संस्कृति की जगह सार्थक सीखने-सिखाने पर ज़ोर देने से शिक्षकों की भूमिका में भी बदलाव आएगा, यानी शिक्षक विद्यार्थियों के बुनियादी प्रयासों को तवज्जो देंगे।
- 21वीं सदी के अनुसार बच्चों का 360 डिग्री विकास करने हेतु शिक्षक खुद को तैयार कर सकेंगे तथा उनके पास कक्षा-कक्ष के बाहर भी बच्चों की मदद करने के मौके होंगे।
- शिक्षक की भूमिका परामर्शदाता की होगी चाहे वह विद्यार्थियों हेतु विषय, हुनर के चुनाव में मदद करने की हो या फिर बोर्ड परीक्षा के भय, डर व दबाव से निजात दिलाने की। विशेषकर गणित का भय बच्चों के दिलोदिमाग से निकाला जाएगा।
- बच्चों को सिखाने के कम उपयोगी तौर-तरीकों की जगह शिक्षकों द्वारा रचनात्मक, 'पीयर ट्यूटरिंग', प्रोजेक्ट, खोज, कहानी कथन, पहेलियाँ, परिवेशीय निरीक्षण, खेलीय गतिविधि, अनुभवात्मक, सहयोगात्मक एवं बहुस्तरीय शिक्षण जैसे ज़रूरी तरीकों पर ज़ोर दिया जाएगा। जिससे शिक्षकों को

मूल्यांकन के नए पैटर्न की जानकारी होगी तथा आकलनात्मक शोध के अवसर भी मिलेंगे।

- शिक्षकों के पास सीखने की अक्षमता वाले बच्चों की पहचान करने तथा उनके समावेशन हेतु शिक्षण के उन्नत तरीकों को जानने का मौका मिलेगा।

निष्कर्ष

'परख' द्वारा लागू की जा रही सर्वमान्य व्यवस्था देश के संपूर्ण राज्य एवं केंद्रीय बोर्ड के पठन-पाठन के तौर-तरीकों एवं आकलन प्रक्रिया में एकरूपता लाएगी। बालकों में समानता एवं न्यायसंगतता का भाव पैदा करेगी। बच्चों के संज्ञानात्मक पक्ष के मूल्यांकन के साथ भावनात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों का मूल्यांकन वर्तमान समय की माँग है, क्योंकि हर एक बच्चा अपने आप में अलग है, उसकी रचनात्मकता, पलटावी समझ, वैचारिक स्पष्टता, चिंतन तथा महत्वपूर्ण सोच जैसे विभिन्न प्रदर्शनों की जाँच-पड़ताल करके ही उनको तरक्की की राह पर लाया जा सकता है। आज का समय दक्षता आधारित सीखने-सिखाने का है, इसलिए बच्चों के ज्ञान, कौशल, मूल्य एवं मंशा का समुचित आकलन करने में 'परख' अगुवा सिद्ध होगा। 'परख' मूल्यांकन के अंतर्राष्ट्रीय मापदंडों का पालन करेगा, जिससे हमारे बच्चों की समझ का दायरा भी विश्वस्तरीय होगा। विद्यार्थियों की प्रगति तथा प्रदर्शन के आकलन हेतु तकनीकी का सहारा लेना 'परख' को और अधिक व्यापक व प्रासंगिक बनाएगा। परंपरागत योगात्मक मूल्यांकन व्यवस्था की जगह रचनात्मक मूल्यांकन पर ज़ोर देने से विद्यार्थियों की रटने की आदत में कमी आएगी, साथ ही परीक्षा का दबाव एवं डर भी खत्म होगा। बच्चों की खूबियों एवं कमज़ोरियों की पहचान एवं जाँच हो सकेगी। सीखने के परिणामों का आकलन भी बखूबी होगा। शिक्षकों में भी दायित्व बोध की भावना का विकास होगा। सभी हितधारकों के लिए 'परख' एक नई आशा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दिशा-दृष्टि को लागू करने में अगुवा सिद्ध होगा। अंततः इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव आने वाले समय में समाज पर सकारात्मक रूप से पड़ेगा।

संदर्भ

चौधरी, कृष्ण चंद्र. 2018. *प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल, विकास और शिक्षा.* बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना.

2020. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साँचे से होगा परिवर्तनकारी सुधार और दूरगामी प्रभाव. *प्राथमिक शिक्षक*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली. अक्तूबर 2020, अंक 4, पृ.सं. 17–25.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.

https://basickamasterlin/2022/08/17/parakh-yojna-new-education-policy/

https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1642061 (11 सितंबर को देखा गया।)

https://transformingindialmygovlin/all-infographics/page/9/?lang=hi&sector=policy-education-skills

https://www.livehindustanlcom/career/story-ncert-parakh-plan-to-assess-students-may-take-off-soon-by-modi-government-education-ministry-6943535lhtml